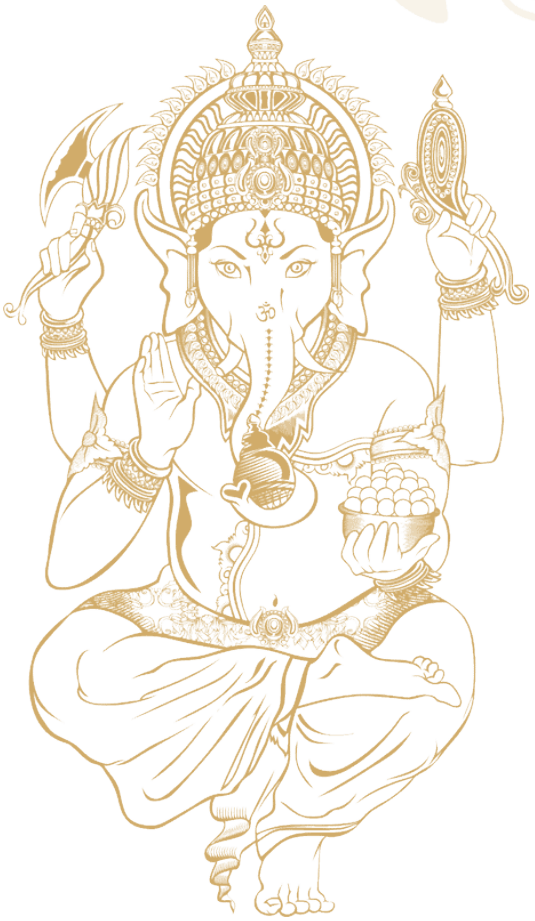

Mr. Sachin arora

12 Oct 1990

01:40 AM

Muzaffarnagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120164701**

तिथि 12/10/1990 **समय** 01:40:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Muzaffarnagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:43:55
अक्षांश 29:28:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	02:41:24 घं
वेलान्तर	00:13:24 घं
सूर्योदय	06:18:01 घं
सूर्यास्त	17:53:43 घं
चैत्रादि संवत	2047
शक संवत	1912
मास	कार्तिक
पक्ष	कृष्ण
तिथि	9
नक्षत्र	पुष्य
योग	सिद्ध
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मेष
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	हू-हुकमसिंह
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	मंगल
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

शनि 18वर्ष 11मा 11दि

बुध

22/09/2009
23/09/2026

बुध	19/02/2012
केतु	15/02/2013
शुक्र	17/12/2015
सूर्य	22/10/2016
चन्द्र	24/03/2018
मंगल	21/03/2019
राहु	08/10/2021
गुरु	13/01/2024
शनि	23/09/2026

योगिनी

धान्या 2वर्ष 11मा 27दि

पिंगला

08/10/2024
09/10/2026

पिंगला	18/11/2024
धान्या	18/01/2025
भ्रामरी	09/04/2025
भद्रिका	19/07/2025
उल्का	18/11/2025
सिद्धा	09/04/2026
संकटा	18/09/2026
मंगला	09/10/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:19:28	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			24:31:05	कन्या	चित्रा	1	मंगल	राहु	सम राशि	0.93	अमात्य	पितृ	वध
चंद्र			03:22:12	कर्क	पुष्य	1	शनि	शनि	स्वराशि	1.45	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			20:15:24	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	केतु	सम राशि	1.24	भ्रातृ	भ्रातृ	साधक
बुध		अ	16:58:53	कन्या	हस्त	3	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण	1.07	पुत्र	ज्ञाति	साधक
गुरु			16:11:26	कर्क	पुष्य	4	शनि	गुरु	उच्च राशि	1.39	ज्ञाति	धन	जन्म
शुक्र		अ	19:09:56	कन्या	हस्त	3	चंद्र	बुध	नीच राशि	0.98	मातृ	कलत्र	साधक
शनि			25:15:31	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	बुध	सम राशि	1.17	आत्मा	आयु	क्षेम
राहु			10:37:31	मक	श्रवण	1	चंद्र	चंद्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु			10:37:31	कर्क	पुष्य	3	शनि	सूर्य	मित्र राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

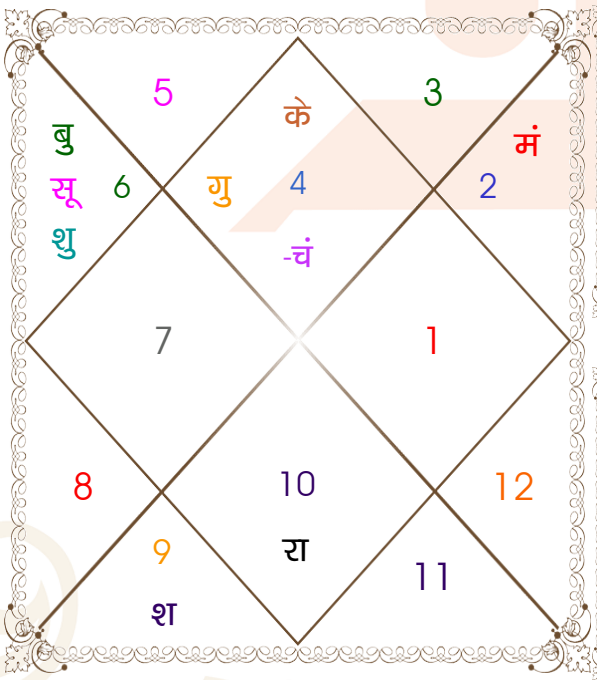

चन्द्र कुंडली

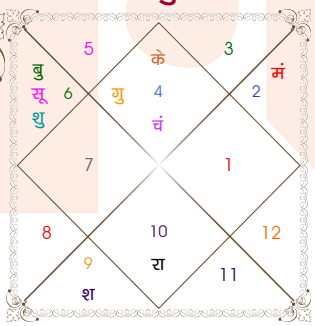

नवमांश कुंडली

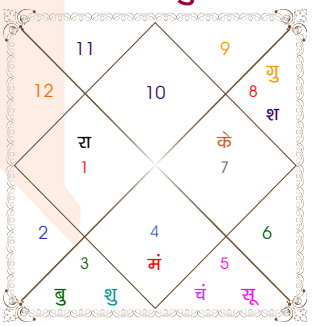

सर्वाष्टकवर्ग

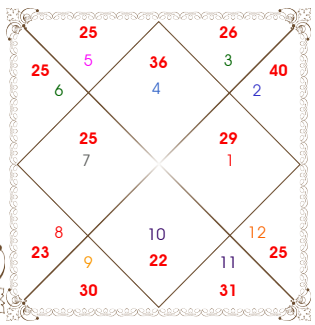

दशमांश कुंडली

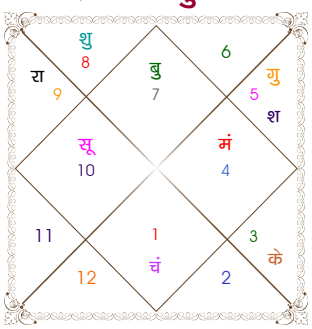

नक्षत्रफल

आपका जन्म पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण देव, नाड़ी मध्य, मेष योनि, विप्रवर्ण तथा मेष वर्ग होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "हु" अक्षर से होगा।

आप देवताओं की पूजा से अर्जित धन से धनवान होंगे। बुद्धि आपकी तीव्र होगी तथा समस्त कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। आप नाना प्रकार के शास्त्रों के ज्ञाता होंगे। आप देखने में सुन्दर तथा सबके प्रिय रहेंगे तथा आपका जीवन समस्त सुखों के उपभोग करने में व्यतीत होगा। साथ ही आपकी प्रकृति कफ से युक्त रहेगी।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।
जातक दीपिका

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त, बुद्धिमान, कफ प्रकृति तथा सुख से परिपूर्ण होता है।

आपकी प्रवृति धार्मिक प्रवृति होगी तथा ईश्वर में आपकी पूर्ण श्रद्धा एवं आस्था रहेगी। आपका हृदय हमेशा शान्त रहेगा तथा शान्तचित्त होकर ही आप अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही पुत्रों से भी आप युक्त रहेंगे।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी।।
मानसागरी

अर्थात पुष्य नक्षत्र का पुरूष देवता तथा धर्म को मानने वाला, धन से युक्त, पुत्रयुक्त, विद्वान, शान्त, सुन्दर तथा सुखी होता है।

आप ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति अपने मन में श्रद्धा भाव रखेंगे तथा यथाशक्ति इनकी पूजा एवं सत्कार करते रहेंगे। धन से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। आप उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग के प्रिय रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त होगा। आप अपने बन्धुवर्ग से भी युक्त रहेंगे तथा सबसे आपके अच्छे सामाजिक संबंध रहेंगे।

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र का बालक हृदय से शान्त प्रकृति वाला, सर्वप्रिय, सुन्दर, विद्वान धन से सम्पन्न तथा धर्माचरण में तत्पर रहता है।

आप हमेशा शारीरिक रूप से सुन्दर तथा स्वस्थ रहेंगे। माता पिता के प्रति आप

अपने कर्तव्य का पूर्ण रूप से निर्वाह करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करते रहेंगे। धर्मानुपालन की प्रवृति का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। अन्य सामाजिक जनों के साथ आपका व्यवहार अत्यन्त ही विनयशील रहेगा। समाज में आप एक सम्मानीय व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक यश की भी आपको प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त धन तथा वाहनादि सुखों से भी आप सदैव युक्त रहेंगे।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः।
जातकाभरणम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

कर्क राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वास्थय मध्यम रहेगा। आप अपने सभी कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा जीवन भर विपुल धन से युक्त होकर समाज में धनाढ्य कहलाएंगे। आप वीरता तथा पराक्रम के भाव से हमेशा युक्त रहेंगे। धार्मिक भावना का समावेश आपके मन में व्याप्त रहेगा तथा पूर्ण रूप से आप धर्मानुसरण करेंगे तथा इसका पालन भी करेंगे। गुरूजनों के आप हमेशा प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा। आपकी बुद्धिमता के प्रभाव को सभी लोग हृदय से स्वीकार करेंगे। यदा कदा आपके अन्दर क्रोध की बहुलता भी दृष्टिगोचर होगी तथा साथ ही कभी कभी आप अत्यन्त दुःख का भी अनुभव करेंगे। आपके मित्र अच्छे तथा गुणों से युक्त होंगे साथ ही आप एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओ में भी निपुण होंगे। शारीरिक बल भी मध्यम रूप से आप में विद्यमान रहेगा। आप घर

से स्थाई या अस्थाई रूप से अन्यत्र निवास करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप वात तथा कफ प्रकृति से युक्त रहेंगे तथा आपका रूप भी सुन्दर तथा तेज युक्त होगा। आप अत्यन्त धनवान होंगे तथा स्वयं अपने परिश्रम से इस धन को अर्जन करेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं में आपकी पूर्ण आस्था रहेंगी तथा यथा समय इनके प्रति पूर्ण श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आप सम्मान का भाव रखेंगे तथा इनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों के अध्ययन में भी आप रूचिशील होंगे तथा अपने अध्ययन तथा परिश्रम द्वारा इनका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अन्य कलाओं के भी जानने वाले होंगे तथा चाल चलन आपका उत्तम रहेगा। पुष्पों की सुगन्ध तथा जल के आप प्रेमी होंगे तथा इनकी प्राप्ति से आप आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही समाज में आपकी कीर्ति पूर्ण रूप से व्याप्त रहेगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

स्त्री से आप पूर्ण रूप से पराजित होकर उसके वश में रहेंगे। आपके बहुत से मित्र होंगे तथा जलविहार के भी शौकीन रहेंगे। आपके द्वारा बहुत से भवन निर्मित होंगे अथवा आप स्वयं बहुत से मकानों के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपका कद सामान्य रहेगा तथा टेढी चाल से शीघ्र चलने की आपकी प्रवृति होगी। साथ ही पुत्रों की संख्या भी अल्प ही रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वको द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में विविध प्रकार की सम्पत्तियों को प्राप्त करेंगे ज्योतिष शास्त्र में आपकी पूर्ण आस्था होगी एवं इसका ज्ञान भी आपको रहेगा। आपका जीवन चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षय वृद्धि को प्राप्त होगा अर्थात उतार चढाव तथा संघर्ष चलते रहेंगे। आपको

केवल प्रेम या स्नेह से ही प्रसन्न रखा जा सकता हैं। दबाव या बलपूर्वक आप किसी के वश में नहीं आएंगे। आप अपने मित्रों को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करने वाले होंगे। आपकी जीव पालने, उद्यान, बागबगीचे तथा जलाशयों के निर्माण में विशेष रूचि रहेगी।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप हमेशा सौभाग्य से युक्त रहेंगे तथा अपने समस्तकार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ होंगे। साथ ही आप मकान के स्वामी भी बनेंगे। आपका अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्राओं में ही व्यतीत होगा। विनयशीलता आपका स्वाभाविक गुण होगा। समाज के अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनके उपकार को मानने वाले होंगे। साथ ही आप राज्य के किसी भी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित कर सकते हैं। सत्य के अनुपालन करने में आप आजीवन यत्नशील रहेंगे तथा सर्वथा सत्य तथा प्रिय ही बोलेंगे जिससे किसी अन्य को कोई भी कष्ट न हो।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आप श्रेष्ठ तथा मधुर वाणी का प्रयोग करेंगे जिससे अन्य जनों को प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। आप सरल बुद्धि से युक्त रहेंगे तथा इसमें कोई भी प्रपंच का समावेश नहीं रहेगा। सरल ढंग से आप अपनी बात अन्यों को कहेंगे तथा उसी तरह अन्य के विचारों को आत्मसात करेंगे। भोजन भी आप शुद्ध, अल्प तथा सात्विक लेना पसन्द करेंगे तथा गुणों के बारे में विस्तृत ज्ञान रखेंगे। आप स्वयं भी महान विद्वानों द्वारा प्रतिपादित गुणों से युक्त रहेंगे। इसके साथ ही धनैश्वर्य भी प्रचुर मात्रा में आपके पास रहेगा।

आपका शरीर देखने में सुन्दर तथा स्वस्थ होगा। आप स्वभाव से ही दानशील होंगे तथा जरूरत मन्द लोगों को यथा शक्ति दान तथा सेवा एवं सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आप सादगी पसन्द होंगे तथा दिखावे या भौतिक प्रपंचों से दूर ही रहेंगे। साथ ही समाज में एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में भी आपका सम्मान तथा आदर होगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मेष योनि में जन्म लेने के कारण आप उत्साह से हमेशा सम्पन्न रहेंगे। आप जो भी कार्य करेंगे उसे उत्साह के साथ पूर्ण करके छोडेंगे। योद्धा या शूरता के गुणों से आप युक्त रहेंगे तथा आपकी प्रमुखता को सभी लोग स्वीकार करेंगे। युद्ध विद्या में भी आप अति निपुण होंगे। धनैश्वर्य तथा वैभव का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इनका आप पूर्ण रूप से आजीवन उपभोग करने में समर्थ होंगे। दूसरे की भलाई करने की नैसर्गिक भावना का अनुशीलन करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोडकर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो।

इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण बुधवार, प्रथम प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दाता होंगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य, 2,7,12 तिथियों, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग तथा नागकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि का ही योग बनेगा। साथ ही बुधवार, प्रथम प्रहर एवं सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए अच्छा समय नहीं चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शंकर भगवान को नित्य विल्वपत्र चढ़ाने चाहिए तथा सोमवार का श्रद्धापूर्वक उपवास करना चाहिए। साथ ही सफेद मोती, सफेद वस्त्र, चावल, मिश्री आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपके अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।